 ISSN: 2582-6530

का नॉहकालिकाइ

(मेघालय की लोककथा)

संकलन: एट्सिंग खिएव्ताम्

मेघालय प्राकृतिक सौन्दर्य के पर्याय के रूप में भी जाना जाता है। यहाँ का प्राकृतिक सौन्दर्य दुनिया भर में प्रसिद्ध है। यहाँ की वर्षा, यहाँ के लोग, यहाँ की संस्कृति एवं लोक साहित्य की अनुपम धाराओं से भारत का यह भूभाग सुशोभित है। मेघालय की यात्रा अथवा पर्यटन का विचार करते ही सॉहरा अथवा चेरापूंजी नामक पर्यटन स्थल का विचार सर्वप्रथम हमारे मस्तिष्क में आता है। सॉहरा जाकर यदि नॉहकालिकाइ झरने का दर्शन नहीं किया तो पर्यटन अधूरा ही रह जाता है। मेघालय ही नहीं, बल्कि सम्पूर्ण भारत एवं भारत के बाहर भी इस झरने की सुंदरता की ख्याति है। यह झरना इतना लुभावना एवं रमणीय है कि सभी इसकी ओर आकर्षित हो जाते हैं। देखते ही पता चलता है कि इस झरने का दृश्य किसी सुंदर स्त्री के लंबे पीछे खुले छोड़े हुए बाल की तरह प्रतीत होता है। परंतु इतने सुंदर, सुरम्य झरने की खासी समाज में एक त्रासदीपूर्ण लोककथा प्रचलित है, जो कि पीढ़ी दर पीढ़ी लोगों को आश्चर्यचकित एवं विचलित करती है। वीभत्स एवं करुण रस से भरी यह कथा आज भी हृदय को पिघला देती है।

खासी प्रदेश में पूर्व सेंराङ जरतॅह (Synrang Jyrteh) नामक स्थान लोहा निर्मिति के लिए प्रसिद्ध था। मावम्लुह (Mawmluh) नामक स्थान लोहे के उत्पाद को बांग्लादेश के सिलहट (Sylhet) शहर तक निर्यात करने का मुख्य द्वार माना जाता था। वहाँ एक महिला मजदूरी करके अपनी आजीविका चलाती थी। उस महिला का नाम था कालिकाइ। वह रोज सेंराङ जरतॅह से मावम्लुह तक लोहा पीठ पर उठाकर पहुंचाती थी। यही उसका जीवन था। लिकाइ एक पीड़ित, शोषित एवं वंचित महिला थी। उसका जीवन कष्टपूर्ण था। उसका पति बेटी के दो महीने होने पर ही गुज़र गया था, इसलिए अपनी बच्ची और अपने लिए लिकाइ रोज़ कष्ट सहकर लोहे का भार उठाती थी। विवाह के बाद लिकाइ अपने पति के साथ सेंराङ जरतॅह चली आई थी, जिस कारण उसका परिवार उससे दूर रहता था। लिकाइ अपना जीवन खुशहाली में व्यतीत करती थी, इसका कारण उसकी बेटी थी। उसकी बेटी ही उसका जीवन थी।

इस प्रकार खुशहाली में लिकाइ का जीवन दो साल बीत गया। परंतु जीवन केवल खुशहाली का ही नाम नहीं, अपितु कष्ट एवं दुःखों का भी नाम है। जीवन में दुःख और कष्टों का होना भी स्वाभाविक है। लिकाइ जब भी कभी मावम्लुह जाती थी तो एक पुरुष से उसकी मुलाक़ात होती रहती थी। वह पुरुष दिखने में बहुत सुंदर, अच्छे एवं संस्कारी परिवार से लगता था। उसके बोलने और हरकतों में लिकाइ के लिए प्रेम एवं आदर-सम्मान परिलक्षित होता था। लिकाइ से वह बड़े आदर से बात करता था, उसका ध्यान रखता एवं उसके साथ प्रेम से व्यवहार करता था। एक दिन उसने लिकाइ को अपने मन की बात बता दी और लिकाइ के प्रति प्रेम का प्रस्ताव रखा। लिकाइ दुविधा में पड़ गयी थी। उस आदमी का प्रेम प्रस्ताव स्वीकारने से पहले लिकाइ ने उसे अपने जीवन के बारे में विस्तार से समझाया। उस आदमी ने तुरंत ही उसके दुःखों, कष्टों के साथ अपनाना

स्वीकार कर लिया, परंतु लिकाइ अभी भी उस आदमी को स्वीकारने से मना कर रही थी। कारण उसके सामने उसके हृदय का टुकड़ा उसकी बेटी की सुरक्षा एवं प्रेम का प्रश्न था। लिकाइ अपनी एक बेटी के होने की बात भी उसे बता दी, उसके सामने चिंता व्यक्त करने लगी, परंतु उस आदमी ने उसकी बेटी को भी अपनी बेटी के रूप में स्वीकार करने का वचन दिया, साथ ही उसकी बेटी को भी उतना ही प्रेम देने का वादा भी किया, जितना वह लिकाइ से करता है।

लिकाइ सीधी-साधी गाँव की महिला थी, उसे न छल का पता था, न झूठ का। वह उस आदमी की बातों में फंस गयी थी। इसीलिए एक बार फिर परिवार एवं गाँव वालों की उपस्थिति में जीवन में एक पुरुष के साथ होने, सुरक्षा एवं सम्मान के एहसास के साथ लिकाइ ने उस आदमी से दूसरा विवाह कर लिया।

दिन बीतते गए, अपने पूर्ण परिवार को देखते हुए लिकाइ बहुत खुश थी। परंतु उसकी खुशी में बहुत जल्द ही ग्रहण लग गया। उसके पति के मन में धीरे-धीरे कुविचार उत्पन्न होने लगा था, वह उसकी बेटी से मन ही मन घृणा करने लगा था। अपने से ज्यादा किसी और की बेटी को लिकाइ के द्वारा अधिक प्रेम करने के कारण उसके मन में उसकी बेटी के प्रति ईर्ष्या का भाव उत्पन्न होने लगा था। परंतु सीधी-साधी लिकाइ को अपनी बेटी के प्रति उस आदमी के मन में पलने वाला ईर्ष्या का आभास तक नहीं लगता था। लिकाइ उस आदमी पर भरोसा करने लगी थी, उसके साथ सुरक्षित महसूस करने लगी थी।

लिकाई का पति एक दिन थकान का बहाना बनाकर उसको अकेले ही मजदूरी करने का आग्रह किया। लिकाइ जो कि उसे भरोसा करने लगी थी, कुछ संशय किए बिना ही मान गयी। जाते-जाते लिकाइ उसे अपनी बच्ची का ध्यान रखने एवं शाम को भोजन तैयार करने का आग्रह कर काम पर चली गयी।

उस आदमी के मन में कई दिनों से पल रहा लिकाइ की बेटी के प्रति घृणा एवं ईर्ष्या को आज बाहर निकालने का अवसर मिल गया। लिकाइ के जाते ही उसके पति ने उसकी बेटी को नहलाया, नहलाकर उसने बच्ची की हत्या कर दी। उस बच्ची के शव को टुकड़े-टुकड़े काटकर उसका गोश्त पकाया । पेट और मन भरने तक उसने खाना खाया और घर से बाहर निकल गया। शाम को थकी-हारी जब लिकाइ वापस घर लौटी तो देखती है कि घर पर कोई नहीं है। अपनी बेटी और पति को घर में न पाकर, उसने सोचा कि बेटी को शायद उसका पति घुमाने ले गया होगा। भूख से व्याकुल होकर लिकाइ सीधा हाथ-मुँह धोकर खाना खाने बैठ गयी। खाने में गोश्त पका देखकर वह बहुत खुश हुई। वह झटपट खाना खाने लगी, गोश्त बहुत स्वादिष्ट बना था, इसीलिए उसने भी पेट भरकर खाना खा लिया। खाना खाने के बाद 'क्वाई'(Kwai) अथवा पान-सुपारी खाने के लिए क्वाई की टोकरी लेकर बैठ गयी। अचानक उसने क्वाई की टोकरी में अपनी बेटी के पैरों की उँगलियाँ देखी। देखते ही वह जान गयी कि ये कटी उँगलियाँ उसकी ही बेटी की हैं। वह चीखने-चिल्लाने लगी। छोटा सूअर का गोश्त समझकर अपनी ही बेटी का गोश्त खाया है, यह जानकर उसका कलेजा फटने लगा। वह पागलों की तरह चिल्लाने लगी, पूरे घर में अपने आपको पटकने लगी। लिकाइ की यह स्थिति अकल्पनीय, असहनीय एवं वेदनीय थी।

आस-पड़ोस के लोग लिकाइ की चीख सुनते ही उसके घर की ओर दौड़ पड़े। लिकाइ को शांत करने की पुरजोर कोशिश करने के बावजूद वे लोग असफल हुए। उनसे लिकाइ की अवस्था देखा नहीं गया। सभी गाँव वालों के लिए यह अकल्पनीय एवं हृदय विदारक घटना थी। लिकाइ को अपने गले में विचित्र अनुभव होने लगा था। वह अपने गले को खरोचने लगी, अपने शरीर और माथे को जोर-जोर से पीटने लगी। उसकी आँखों से आँसुओं की धार निर्बाध प्रवाहित हो रही थी। जोर-जोर से चीखने-चिल्लाने के कारण लिकाइ का गला फटने लगा था। अपने जीवन की व्यर्थता को जानकार लिकाइ को अब जीने की कोई इच्छा नहीं रह गयी थी। वह अपने हाथ में तलवार लेकर पागल की तरह पूरे गाँव में दौड़ने लगी, अंततः वह एक खाई की चोटी पर जा पहुँची। खाई में कूदने से पहले वह अपने बालों को खोल ज़ोर-ज़ोर से रोने लगी और अपनी बेटी को पुकारकर लिकाइ वहाँ से कूदकर अपनी जान दे दी।

लिकाइ ने जिस खाई से कूदकर आत्महत्या की थी, वहाँ से एक झरना बहता था। उस दिन से इस झरने को 'का क्षाइद नॉहकालिकाइ' अथवा 'नॉहकालिकाइ झरना' के नाम से जाना जाने लगा। अतः लोककथा में वर्णित घटना एवं उसकी त्रासदी भरी कहानी के माध्यम से आने वाली पीढ़ी को सचेत एवं सीख देने के उद्देश्य से लोगों ने इस झरने को कालिकाइ नाम दिया। आने वाली पीढ़ी इस लोककथा के माध्यम से यह जान सकेगी कि सौतेला बाप आखिर सौतेला बाप ही होता है।

(लेखकीय परिचय: लेखक उत्तर पर्वतीय विश्वविद्यालय, शिलांग, मेघालय के हिंदी विभाग में शोधरत हैं।)